दुनिया की फसलों को बचाने का अंतर्राष्ट्रीय प्रयास

जलवायु परिवर्तन व अन्य कारकों का एक खतरा यह हो सकता है कि दुनिया का पेट भरने वाली फसलें लुप्त होने लगें। यदि ऐसा हुआ तो खाद्यान्न का गंभीर संकट पैदा हो जाएगा। इस संकट को टालने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रयास शुरू हुए हैं।

इस सिलसिले में पेरू के क्वेचुआ इण्डियन्स को एक विशेष वैश्विक कोश से सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। यह सहायता उन्हें इसलिए दी जा रही है कि वे आलू की विभिन्न किस्मों का संरक्षण करते रहें। पेरू के किसान आलू की कई किस्में उगाते हैं। दुनिया भर में आलू का सबसे विविध भंडार पेरू में ही उपलब्ध है। कारण यह है कि वहां अलग-अलग ऊंचाइयों पर किसान अलग-अलग किस्में उगाते हैं।

उपरोक्त सहायता खाद्य व कृषि के लिए वनस्पति जिनेटिक संसाधनों की अंतर्राष्ट्रीय संधि के अंतर्गत निर्मित एक कोश से दी जा रही है। वैसे तो इस संधि का अनुमोदन 2001 में ही हो गया था मगर इस बात को लेकर काफी खींचतान थी कि कोश हेतु पैसा कौन दे और कितना दे। हाल ही में ट्यूनिशिया में संपन्न बातचीत के बाद दुनिया के अमीर देश इसके लिए पैसा देने को तैयार हुए हैं।

इस सहायता का मकसद यह है कि किसानों को विविध किस्में उगाते रहने के लिए वित्तीय सहारा दिया जाए ताकि वे मात्र आर्थिक रूप से उपयोगी किस्मों को ही उगाने का विकल्प न अपनाएं। इस तरह से उन्हें पारंपरिक व असाधारण किस्में उगाते रहने को मनाया जा

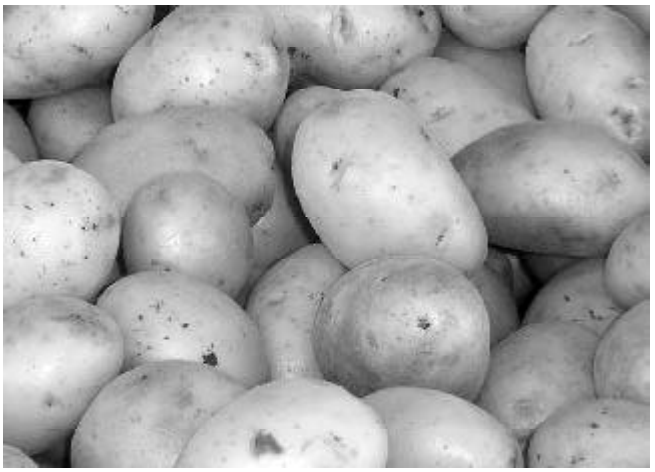

सकेगा। एक मायने में यह एक बीमा है जिसके चलते पेरू के क्वेचुआ इण्डियन्स आलू की अलाभदायक फसलें भी उगाते रहेंगे।

गौरतलब है कि इसी संधि के तहत पिछले वर्ष नॉर्वे में स्वालबार्ड में एक अंतर्राष्ट्रीय बीज कोश की स्थापना भी हो चुकी है जिसमें विभिन्न फसलों के 11 लाख किस्म के बीजों का संरक्षण किया जा रहा है।

उम्मीद है कि इस नवीन पहल के ज़रिए फसलों की किस्मों को उनके प्राकृतिक परिवेश में संरक्षित करने में मदद मिलेगी और यह खाद्यान्न संकट को टालने में मददगार होगी। फिलहाल नॉर्वे, स्पैन, इटली और स्विट्ज़रलैण्ड ने इस कोश में 5 लाख डॉलर का योगदान दिया है और आशा है कि जल्दी ही अन्य अमीर देश भी अपना-अपना योगदान दे देंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***